Subject: — Sociology Date: — 03/05/2020
Class: — D-II (H) Paper: — IIIrd & Subsidiary
Topic: — समकालीन भारत में नारियों की समस्या
By: — Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari College, Darbhanga.
Online Study Material No: — 66

विषय प्रवेश → आज भारत में महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार हुआ है। उन्हें भी वे सभी अधिकार प्राप्त हुए हैं जो पुरुषों को प्राप्त है फिर भी उन्हें पारिवारिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। सैद्धान्तिक रूप में यह मान लिया जाता है कि स्त्रियों को पुरुषों के समान सभी संविधानिक अधिकार प्राप्त हो गए हैं किंतु आज भी पितृसत्तात्मक भारतीय समाज में उनकी प्रस्थिति पुरुषों के अधीन है।

इससे स्पष्ट होता है समकालीन भारतीय समाज में नारियाँ अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना कर रही हैं। उनकी प्रमुख समस्याएँ निम्नांकित हैं:—

(1) लिंग भेद भाव → प्रत्येक पितृसत्तात्मक परिवार का यह सामान्य लक्षण है कि वहाँ पुरुष की प्रधानता होती है और नारी का अवमूल्यन होता है। नारी का जन्म अपने आप में अभिशाप माना जाता है। पुत्र के जन्म लेने पर घर में खुशी का माहौल बन जाता है, जबकी पुत्री के जन्म लेते ही सारा परिवार गम के सागर में डूब जाता है। कुछ लोग गर्भ परीक्षा करवाने के फलस्वरूप मादा भ्रूण हत्या करवाते हैं। पुत्र मुक्तिदाता, बुढ़ापे का सहारा और घर की पूँजी समझा जाता है, जबकी पुत्री का जन्म एक दायित्व और ऋण समझा जाता है। इसलिए जन्म से ही लिंग भेद भाव समझा जाता है। दोनों के लालन-पालन में भी अन्तर किया जाता है। लड़कों की प्रत्येक इच्छा पूरी की जाती है किंतु लड़कियों की नहीं।

K.M. Panikkar ने अपनी पुस्तक 'Hindu Society at Cross Roads' में स्पष्ट लिखा है कि हिन्दु सामाजिक जीवन की सबसे प्रमुख समस्याओं में से एक हिन्दु संयुक्त परिवार में नारी को प्रदान की जाने वाली प्रस्थिति है। आधारभूत रूप से हिन्दु सामाजिक व्यवस्था यह मानकर चलती है कि पुत्री परिवार का भाग नहीं है। वह तो एक ऐसा आभूषण है जो गिरवी रखा है और जब उसका कानूनी मालिक आयेगा और उसकी माँग करेगा, तो उसे दे दिया जाएगा।

लिंग भेद भाव यौन पृथक्करण में प्रकट होता है। लड़को और लड़कियों के जरा बड़ा होते ही अलग-अलग क्षेत्र हो जाते हैं। उनके खेल, पढ़ाई, संस्कार और जीवन की पूरी तैयारी भी अलग-अलग होती है। लड़का-लड़की अपने Sex के अनुरूप व्यवहार की माँग की जाने लगती है। यदि लड़के और लड़कियाँ अपने Sex के अनुरूप व्यवहार नहीं करते हैं तो उनकी समाज में मजाक उड़ाया जाता है। और यदि Sex के अनुरूप व्यवहार किया जाता है तो उनकी समाज में प्रशंसा किया जाता है। लड़के को घर से बाहर का जीव माना जाता है जो व्यावसायिक तैयारी करनी होती है, उसे जीवन की कठिन प्रतियोगिता के लिए तैयार किया जाता है जबकि लड़की का जीवन उसके घर की चारदीवारी है और वह रसोई तैयार करने, घर के रख रखाव एवं बच्चों के लालन-पालन के लिए समाजीकृत

की जाती है। घर के बाहर वह नारी नहीं समझी जाती है। वह या तो वेश्या समझी जाती है या देवी। नारी के लिए शारीरिक शुचिता सबसे बड़ा मूल्य समझा जाता है जिसका अर्थ है विवाह से पूर्व कोई उसके शरीर को यौन की दृष्टि से स्पर्श न करे जबकी पुरुष के शरीर का शुचिता का प्रश्न नहीं उठता है। स्त्री को पराया धन समझकर उसकी शिक्षा या स्वास्थ पर धन खर्च करना अपव्यय समझा जाता है, जबकि लड़कों पर व्यय करना अपव्यय नहीं समझा जाता है। नारीवादियों ने लिंग के आधार पर श्रम विभाजन का विरोध किया है। घर के भीतर के सभी कार्य जो औरतों के ही जिम्मे माने जाते हैं उसे पुरुष भी उतनी ही दक्षता के साथ कर सकते हैं। एक तरफ औरतों को शारीरिक रूप से कमजोर और भारी शारीरिक श्रम के लिए अनुपयुक्त माना जाता है। दूसरी तरफ घर के भीतर और बाहर सबसे भारी काम वही करती है। लेकिन जब औरतों द्वारा किए जाने वाले कामों का मशीनीकरण हो जाता है जिससे वह काम आसान भी हो जाता है और तब इस्तेमाल को करने का प्रशिक्षण पुरुषों को दिया जाता है और औरतों के साथ अन्याय किया जाता है।

(2) शिक्षा की समस्या → नयी दिल्ली स्थित भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद (I.C.S.S.R) द्वारा अध्ययन से 1971 ई० मे साक्षर महिलाऐं 18.4% थी, 1981 ई० में 25% था जबकि 1991 की जनगणना के अनुसार 39.42%. था तथा 2001 ई० की जनगणना के अनुसार 54.16%. हो गयी। अर्थात् हमारे देश मे साक्षर महिलाओं की संख्या निरक्षर महिलाओं की तुलना में अधिक हो गई है। लेकिन विकसित देशों की तुलना में यह कुछ भी नहीं है। यदि पुरुषों की साक्षरता से तुलना करें तो यह स्पष्ट हो सकता है कि 2001 ई० में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में साक्षरता दर 21.69 %. कम है। क्योंकी 2001 में पुरुषों की साक्षरता की दर 75.85 %. थी।

नारी शिक्षा से सम्बन्धित सबसे प्रमुख समस्या यह है कि प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर नारियों के बीच पढ़ाई छोड़ने की दर बहुत अधिक है। इस देश में 100 लड़किया स्कूल में प्रवेश लेने वाली में 22 ही आठवीं कक्षा से ऊपर पहुँच पाती है। 46 %. लड़कियाँ पाँचवी कक्षा तक भी नही पहुँच पाती है और 32 %. लड़कियाँ आठवीं कक्षा से पहले ही पढ़ाई छोड़ देती है। गरीब माँ-बाप लड़कियों को आगे पढ़ा नहीं पाते क्योंकी उन्हे या तो घरेलू काम-काज में सहायता देने पड़ती है या अपने छोटे बहन-भाई को देखना पड़ता है या लड़कियों को अधिक पढ़ाना फिजूल खर्ची समझा जाता है क्योंकी अन्ततः उसका विवाह हो जाना है और उसे वहाँ भी गृहस्थी का ही काम-काज देखना है। भारत गाँवों का देश माना गया है लेकिन अधिकांश गाँव में विद्यालय की समस्या विद्यमान है। दूसरे गाँव में अगर विद्यालय है तो लड़कियों को आने-जाने, असुरक्षा, अपहरण, बलात्कार वगैरह - वगैरह के भय से भी पढ़ने नहीं भेजा जाता है।

(3) रोजगार की समस्या → पुरुषों की तुलना में नारियाँ कठिन कार्य के बावजूद भी रोजगार के क्षेत्र में पुरुषों के भाँति बहुत पीछे है जो इस प्रकार से हैं:-

Scanned with CamScanner

(i) कृषि के क्षेत्र में → जहाँ 80% नारियाँ काम कर रही हैं, नारी श्रम को पुरुषों की अपेक्षा कम मजदूरी मिलती है तथा वे मौसमी बेरोजगारी का शिकार बनी रहती है।

(ii) जिन घरेलू उद्योगों जैसे- अगरबत्ती, बीड़ी, माचिस, चटाई, पापड़ उद्योग आदि में औरतों को रोजगार मिलता है उनमें न तो रोजगार सुरक्षित है और न ही मजदूरी दर निश्चित है।

(iii) संगठित उद्योगों में स्त्रियाँ निम्न स्तर पर ही कार्य कर रही हैं। साधारी कुछ प्रमुख उद्योगों जैसे- जूट, कपड़ा या खादयानों में उनका प्रतिशत घट रहा है। नए उद्योगों जैसे- Electronics या computer के क्षेत्र में उनकी उपस्थिति नगण्य है क्योंकी इससे सम्बन्धित शिक्षा का उनमे पर्याप्त अभाव है। इसलिए ज्यादातर वे रिसेप्शनिस्ट, टाइपिस्ट, स्टेनोग्राफर, निजी सचीव आदि के रूप मे कार्य करती हुई देखी जा सकती हैं।

(iv) रोजगार की दृष्टि से सर्वाधिक नारियाँ शिक्षण पेशा में प्राथमिक और मध्य विद्यालयों में हैं महाविद्यालयों और स्नातकोत्तर विभागों में उनकी नियुक्ति नहीं के बराबर है। आजकल नारियों का झुकाव चिकित्सा तथा नर्सिंग पेशा की तरफ बढ़ रहा है।

नारी रोजगार से सम्बन्धित एक समस्या यह भी है कि पुरुष अभी उसके साथ सहयोगी के भाव से काम करने की मानसिकता नहीं बना पाया है वह नारी को एक व्यक्ति (Person) के रूप में नहीं देखता। नारी पुरुष के समक्ष यौन प्रतीक (Sex Symbol) मात्र है। यदि नारी अपने मेहनत से भी तरक्की करती है तो समझा जाता है कि उसने यौन सीढ़ी का सहारा लेकर Boss को खुश कर रखा है। कहीं-कहीं तो वास्तव में Boss या दुश्चरित्र सहयोगी उनका यौन शोषण करने का प्रयत्न करते हैं और उसके लिए संघर्ष की स्थिति उत्पन्न कर देते हैं।

(4) धार्मिक अंधविश्वास एवं अज्ञानता → भारतीय नारियाँ धार्मिक अंधविश्वास का भी शिकार रही हैं। वह कोई व्रत पुत्र के लिए तो कोई व्रत पति के लिए करती हैं चाहे पति दुराचारी ही क्यों न हो। इसाई धर्म और इस्लाम धर्म उन्हें धर्म गुरु बनने की प्रेरणा नहीं देते। वे सेविका और भक्त ही बन सकती हैं अशिक्षित के कारण वे पर्दा प्रथा का शिकार बनी रहती हैं। कईयों को डायन घोषित कर मार दिया जाता है। कभी-कभी साधुओं और फकीरों के जाल में फँसकर अपनी इज्जत भी गवानी पड़ती है।

(5) दहेज की समस्या → दहेज की समस्या भारतीय समाज की नारियों की एक प्रमुख समस्या है। इसके कारण प्रतिवर्ष अनेक महिलाओं को जलाकर या जहर देकर मार दिया जाता है या उन्हें इतनी अधिक शारीरिक यातनाएँ दी जाती है कि जिन्दा रहने की तुलना में आत्म हत्या करना बेहतर समझने लगती हैं। 'धर्म युग' पत्रिका में 14 जून 1981 को प्रकाशित एक लेख 'आत्म हत्या' दहेज कितना जिम्मेदार' के आँकड़ो से पता चलता है कि भारत में प्रत्येक तीन घंटे पर एक नव विवाहिता दहेज के कारण अपनी जीवन लीला समाप्त कर देती है। आचार्य कृपलानी ने ठीक ही कहा था कि बुराई केवल कानून से दूर नहीं हो सकती।

(6) तलाक → पति-पत्नि के वैवाहिक सम्बन्धों का कानूनी दृष्टि से विच्छेद किया जाना तलाक है। मुस्लिम समाज में बिना कानूनी प्रक्रिया का पालन किए हुए भी तलाक दिया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

A

और वह गुजारा भत्ता माँगने का भी हकदार नहीं है। हिन्दु विवाह और विवाह विच्छेद अधिनियम 1955 ने हिन्दु पुरुष और स्त्री दोनों को ही तलाक देने का अधिकार प्रदान किया है किंतलाक नारी के लिए पुरुषों की अपेक्षा अधिक कष्टकारी घटना है। अदालत की लम्बी प्रक्रिया, बच्चों का प्रश्न, स्वयं के जीवन निर्वाह और सुरक्षा का प्रश्न, सामाजिक अप्रतिष्ठा और निन्दा का सामना यह सब नारी को ही भुगतना पड़ता है पुरुषों को नहीं। तलाक प्राप्त नारी का पुनर्विवाह भी संभव नहीं प्रतीत होता। ऐसी परिस्थिति में वह जिन्दा रहते हुए अनेक कठिनाईयों को झेलने के लिए मजबूर हो जाती है।

(7) बलात्कार और यौन उत्पीड़न → औरतों का बलात्कार करने वालो में आम नागरीक, सेना के जवान, पुलिस के जवान सभी सम्मिलित हैं। प्रायः किसी भी अपराध के सम्बन्ध में पूछताछ के लिए जब नारियों को पुलिस हिरासत में लिया जाता है तब कानून के रक्षकों द्वारा ही उनका सामूहिक बलात्कार किया जाता है। भारत में प्रति दो घंटे में इस प्रकार की घटना घटती है। नारियाँ बलात्कार का शिकार अनेक साम्प्रदायिक दंगो और युद्धों में सदा से होती रही है। शत्रु को सबसे अधिक अपमानित करने का और सबक सिखाने का सबसे कारगर तरीका यही समझा जाता है कि शत्रु की नारियों का नग्न जूलुस निकाला जाए या उनसे सामूहिक बलात्कार किया जाय।

(8) नारी हत्या → नारी हत्या वह हत्या कही जा सकती है जो उस समय हो जबकि वह माँ के गर्भ में है या जन्म लेने के बाद नारी शिशु हत्या के रुप में है या बहू को जलाकर या विष देकर मार देने के रुप में है या अन्य किसी भी प्रकार के उत्पीड़न से मार देने के रुप में है। अथवा नारी को शारिरीक यातनाएँ देकर उसे मजबूर पश हो करआत्म हत्या कर ली हो। यह नारी हत्या की समस्या भी महिलाओं की प्रमुख समस्या है।

इसके अतिरिक्त वेश्यावृति, घरेलू हिंसा, वैधव्य, स्वास्थ एवं पोषण, देवदासी प्रथा का प्रचलन, नग्न एवं अर्धनग्न नारी की तस्वीरें, काम चेष्टाओं और अश्लील साहित्यों का प्रकाशन, व्यावसायिक विज्ञापनो में नारियों के आपत्ति जनक अंगों का प्रदर्शन, चलचित्रों में नारीयों के बलात्कार के दृश्यों का प्रदर्शन, कैबरे नृत्य के माध्यम से नृत्य के नाम पर नारी के अंगों का प्रदर्शन कराना आदि भी भारतीय नारियों की समस्याएँ कही जा सकती है। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक स्थलों, बसों, ट्रेनों और कॉलेज कैम्पस में लड़कियों के साथ छेड़खानी करना, उन्हे देखकर अश्लील गीत गाना आदि भी नारियों की समस्याएँ है।

S. N. Choudhary
Marwari College
L. N. M. U

Scanned with CamScanner